चेंजिंग वेज

Changing Ways

(साप्ताहिक)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. HP/DMA/113

❑ वर्ष 01 ❑ अंक 19 ❑ पृष्ठ : 04 ❑ मूल्य : 4 रुपये धर्मशाला, 18 जुलाई 2016 हर सोमवार को प्रकाशित

जेनरिक दवा : ब्रांडेड कंपनियों का खेल, बेबस सरकारें

कांगड़ा-चंबा लोकसभा क्षेत्र के सांसद व वरिष्ठ भाजपा नेता शांता कुमार ने चिकित्सकों द्वारा ब्रांडेड कंपनियों के बजाय जेनरिक दवाईयां लिखने के सख्त कानून बनाने की बात उछालकर एक बार फिर से हमारी व्यवस्था को कटघरे में खड़ा किया है। हालांकि उन्होंने हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री कौल सिंह ठाकुर के उन आदेशों का भी स्वागत किया है जिनमें उन्होंने सरकारी डाक्टरों को जेनरिक दवाएं ही लिखने की बात कही है। शांता कुमार ने कहा कि इन आदेशों को लागू किया जाना ज्यादा जरूरी है। एक अपुष्ट आंकड़े के मुताबिक भारत में दवाओं की मार्केट लगभग एक लाख बीस हजार करोड़ रुपए से अधिक की है। जो रकम हम लाइफ सेविंग ड्रग्स के लिए अदा करते हैं उसमें से ज्यादा हिस्सा तो डॉक्टरों और अधिकारियों को खुश करने और कंपनियों की जेब में ही जाता है। अगर सरकार जेनरिक दवाओं को बढ़ावा देते हुए हर मरीज तक इनकी पहुंच बढ़ाने के सख्त उपाय करे तो मरीजों की जेब ढीली नहीं होगी। इससे प्रति व्यक्ति आय में भी फर्क पड़ेगा। एक जानकार का कहना है कि सरकार देश में तमाम चीजों पर सब्सिडी देती है, अगर वह 60 हजार करोड़ की धनराशि जेनरिक दवाओं के लिए दे दे तो अमीर गरीब सभी को मुफ्त में दवाएं मिलने लगेंगी।

फिलहाल हालत यह है कि ब्रांडेड कंपनियां देश के लोगों की सेहत के नाम पर अरबों रुपये का मुनाफ कमाने के खेल में लगी हुई हैं। इस खेल में अन्यों के अलावा हमारे डॉक्टर भी पूरी तरह शामिल हैं। इन कंपनियों से मिलने वाली कमीशन और अन्य सुविधाओं की लालच में डॉक्टर बेबस मरीजों की लाचारी से खूब खेलते हैं।

यही बड़ा कारण माना जाता है जिसके कारण जेनरिक दवाओं तक आम आदमी की पहुंच नहीं बन पाई है। हालांकि जागरूकता के चलते एक तबके को इसका फायदा पहुंचा है, मगर जिस गरीब आबादी तक इसका फायदा पहुंचना चाहिए था, उसमें चिकित्सकों का तंत्र बाधा बना हुआ है। डाक्टरों की कमी से जूझ रहीं राज्य सरकारें उन पर सख्ती से नुकेल कसने की हिम्मत नहीं दिखा पा रही हैं। इसके अलावा कमीशनखोरी के चलते अधिकारी भी सरकारी पैसे से ब्रांडेड दवाओं को खरीद को ज्यादा तरजीह देते हैं। इन कई सवालों के बीच फिलहाल हम इस अंक में आपके लिए जेनरिक दवाओं से जुड़े कुछ तथ्य व जानकारियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

इम्पार्टेंट फैक्ट्स

- भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा दवा उत्पादक देश है
- सालाना करीब 50 हजार करोड़ की जेनरिक दवाएं निर्यात होती हैं
- यूनिसेफ 50 फीसदी दवाएं भारत से ही खरीदता है
- यह भारतीय दवाओं की अच्छी क्वालिटी का सबूत है
- कुछ देशों ने जेनरिक दवाएं ही लिखने का कानून बना रखा है
- भारत में डॉक्टर ब्रांडेड कंपनियों के प्रभाव में
- सरकारी आदेशों के बावजूद जेनरिक दवाएं नहीं लिखी जातीं
- डॉक्टरों का सहयोग न मिलने के कारण जन औषधी केंद्र घाटे में

डॉक्टर का लाइसेंस रद्द करने का कानून बने : शांता कुमार

पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान सांसद शांता कुमार का कहा कि इस संबंध में

केंद्र सरकार द्वारा गठित स्वास्थ्य संसदीय समिति के अध्यक्ष होने के नाते उन्हें पता चला था कि ब्रांडेड दवाओं और जेनरिक दवाओं में एक के मुकाबले बीस रुपये का अंतर होता है। उन्होंने कहा कि हमारे देश के डाक्टर बड़ी-बड़ी कंपनियों से मिलने वाले फायदों की लालच में देश की गरीब जनता को महंगी दवाएं लिखते हैं। उन्होंने कहा कि जिस देश की तीस करोड़ आबादी को खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं नसीब होती है, उस देश के डाक्टरों का यह रवैया असहनीय है। उन्होंने कहा कि उन्होंने केंद्र सरकार के समक्ष यह मुद्दा उठाया है और उठाते आ रहे हैं कि जेनरिक दवाएं न लिखने वाले डाक्टरों के लाइसेंस रद्द करने का कानून बनाया जाए। उन्होंने कहा कि उन्होंने देश भर के डाक्टरों को लिखे खुले पत्र में भी आह्वान किया था कि देश के गरीबों को ब्रांडेड कंपनियों की लूट का शिकार न होने दें। इसके बावजूद डाक्टरों ने विदेशों दौरों और कमीशन के लालच में यह काम नहीं छोड़ा है। उन्होंने कहा कि अब तो सरकार व कानून की सख्ती ही डाक्टरों को काबू कर सकती है।

शांता कुमार ने बताया कि कुछ देशों में तो ब्रांडेड दवाएं लिखने पर प्रतिबंध लगा रखा है। उन्होंने हैरानी जताते हुए कहा कि हमारे देश की जैनेटिक दवाओं को अमेरिका और यूरोप के देश खरीद रहे हैं और हमारी सरकारें अपने गरीब नागरिकों तक इनकी पहुंच नहीं बना सकी हैं।

शांता कुमार ने पिछले दिनों जिला कांगड़ा के मुख्यालय धर्मशाला में आयोजित राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत जिला स्तरीय निगरानी समिति बैठक की अध्यक्षता के दौरान यह बातें कहीं। उन्होंने चिकित्सकों का भी आह्वान किया है कि वे मरीजों को महंगी दवाईयों के बदले जेनेरिक दवाईयां लिखें ताकि उन्हें सस्ती दरों पर दवाईयां उपलब्ध हो सकें।

क्या है जेनरिक दवाई

ऐसी दवाई जो किसी ब्रांड नाम से नहीं, बल्कि उसी नाम से बनाई और बेची जाती है जो इसकी विशेषज्ञ समिति ने तय किया है वह जेनेरिक मेडिसिन या सामान्य दवाई कहलाती है। इसमें भी वही तत्व (इनग्रेडिएंट) मिले होते हैं जो एक ब्रांडेड दवा में होते हैं। जैसे बुखार और दर्द दूर करने वाली पैरासिटामॉल की टेबलेट हर कंपनी अलग-अलग नामों से बनाकर बेचती है। लेकिन यदि यह जेनेरिक होगी उस पर सिर्फ पैरासिटामॉल लिखा होगा। कंपनियों को दवाइयों के प्रचार-प्रसार के खर्च के साथ ही कई तरह के टैक्स चुकाने पड़ते हैं, जिसके चलते यह मरीजों को काफी महंगे दामों में मिलती है।

कलर और रैपर में फर्क गुणवत्ता में नहीं

अगर आपको यह लगता है कि ब्रांडेड दवाएं ज्यादा फायदा करती हैं और जेनरिक कम असरकारक होती हैं, तो यह आपकी गलतफहमी है। जेनरिक और ब्रांडेड दवाओं में सिर्फ नाम का फर्क है क्वालिटी का नहीं। नेशनल एक्रीडेशन बोर्ड फॉर लेबोरेट्री (एनएबीएल) अधृष्ट लैब से जेनरिक दवाएं क्वालिटी में खरी उतरी हैं। जेनरिक दवाओं को मतलब यह नहीं है कि स्थानीय स्तर पर बनाई जाती हैं। एक से एक ब्रांडेड कंपनियां भी जेनरिक दवाएं बनाती हैं। फर्क सिर्फ इतना रहता है कि जेनरिक दवा में कंपनी का नाम रहता है, लेकिन दवा का कोई नाम नहीं दिया जाता है। एक विशेषज्ञ का कहना है कि जेनरिक और ब्रांडेड दवाओं में सिर्फ नाम का अंतर है। बीमारियों पर इनका असर एक समान होता है। मल्टीनेशनल दवा निर्माता कंपनियां ज्यादा कमाई के लालच में शुरू से ही जान-बूझकर जेनरिक दवाओं को लेकर भ्रांति फैला रही हैं। ये कंपनियां दवाओं के स्ट्रिप पर दवा की मूल कीमत का 70 से 80 गुना तक ज्यादा मूल्य अंकित रहता है। महंगाई के दौर में जेनरिक दवाओं से आम आदमी को काफी राहत मिलती है।

बीस गुना तक कम होती है कीमत

जेनरिक और ब्रांडेड दवा में सिर्फ नाम का फर्क होता है। दोनों दवाओं की गुणवत्ता एक जैसी होती है। इसकी वजह यह है कि दोनों तरह की दवाओं में एक ही तरह का कच्चा मेटेरियल उपयोग किया जाता है। दवाओं की गुणवत्ता की जांच भी ब्रांडेड दवाओं की तरह ही की जाती है। रैपर, कलर और नाम जरूर ब्रांडेड दवाओं के अलग हो सकते हैं, मगर असर एक जैसा ही है। प्रदेश व केंद्र सरकारों ने प्रदेश में कई जगह जन औषधी केंद्रों खोले हैं। यहां पर ब्रांडेड के मुकाबले जेनरिक दवाएं 20 गुना तक सस्ती मिलती हैं। फर्क इतना है कि अगर डाक्टर पर्ची पर जेनरिक दवाएं लिखे, तभी मरीज इन्हें खरीद पाता है।

जेनरिक दवाओं के नाम पर भी हो रहा धोखा

जेनरिक दवाओं के नाम पर भी पब्लिक की जेबों पर डाका डाला जा रहा है। जेनरिक दवाओं पर प्रिंटेड एमआरपी रेट का फायदा उठाकर उन्हें ब्रांडेड कंपनियों की तर्ज पर बेचा जा रहा है। सरकार के निर्देशों पर फार्मा कंपनियां आम जनता को सस्ते दामों में बेहतर दवाएं मुहैया कराने के लिए जेनरिक दवाओं का उत्पादन करना होता है। हैरानी की बात ये है कि इन जेनरिक दवाईयों का लाभ आम जनता को नहीं मिल रहा है, क्योंकि ज्यादातर मेडिकल स्टोर्स पर जेनरिक दवाओं को ब्रांडेड कंपनियों की तरह एमआरपी रेट पर बेचा जाता है। ऐसा कई राज्यों में हो रहा है। आकड़ों की मानें तो हर महीने जेनरिक दवाओं के नाम पर करोड़ों रुपये का फर्जीवाड़ा हो जाता है।

जेनरिक दवाओं को पहचानना नामुमकिन

जेनरिक दवाओं के नाम पर हो रहे खेल में सबसे शॉकिंग फैक्ट ये है कि इन दवाओं पर उसकी कॉस्टिंग से कई गुना लगभग 10 से 90 फीसद तक ज्यादा एमआरपी रेट प्रिंट किए जाते हैं। इससे भी ज्यादा हैरानी की बात ये है कि इन दवाओं पर कोई भी ऐसा साइन या फिर नोट नहीं लिखा होता है, जिससे पब्लिक को ये पता चल सके कि ये दवाई जेनरिक हैं। ऐसे में मेडिकल स्टोर वाले इन जेनरिक दवाओं को एमआरपी रेट पर ही बेच देते हैं। केंद्र सरकार ये तो मानती है कि ब्रांडेड दवा के नाम पर लोगों को लूटा जा रहा है, मगर इस दवाओं की एमआरपी को कम करने के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए हैं।

चेंजिंग वेज
Changing Ways
धर्मशाला, 18 जुलाई 2016

सुलगता कश्मीर : भारत सरकार की नीति की विफलता

आतंकी को मारना कोई अपराध नहीं है। मगर बुरहान वानी की मौत पर पूरी कश्मीर घाटी ऐसे उबल रही है जैसे कोई आतंकी नहीं, देशभक्त मारा गया हो। जमीनी सच्चाई भी यही है। घाटी में अलगाववादी और पाकिस्तानी पिट्ठू बुरहानी और उस जैसे आतंकी की मौत को शहादत के रुप में पेश कर रहे हैं और अवाम भी कमोवेश यही मान रही है। बुरहानी न तो कोई देशभक्त था और न ही बड़ा नेता। आतंक का चोला पहनकर और खून-खराबा करके कोई देशभक्त या फाइटर नहीं बन जाता। दुखद स्थिति यह है कि कश्मीर घाटी में पाकिस्तान के पिट्ठू अवाम को गुमराह करने में सफल रहे हैं और राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय राजनीतिक दल अलगाववादियों को अलग-थलग करने में पूरी तरह से विफल।

-चंद्र शर्मा

सुरक्षा बलों द्वारा जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तानी आतंकी संगठन हिजबुल के पोस्टर बॉय 22 वर्षीय खूंखार आतंकी बुरहान वानी को मार गिराने के बाद पूरी घाटी हिंसा और विरोध प्रदर्शन में सुलग रही है। कश्मीर के ताजा हालात इस सच्चाई को उजागर करते हैं कि घाटी मे हवा राष्ट्रीय मुख्यधारा के पक्ष में नहीं है। सुरक्षा बलों ने किसी निर्दोष को नहीं, बल्कि खूंखार आतंकी को मार गिराया है। पिछले कई माह से वानी सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से सैन्य पोशाक में अपनी और अन्य आतंकियों की फोटो पोस्ट करता और बड़ी शान से अपनी और अपने गिरोह की आतंकी हरकतों की डींगें हांकता। इसी वजह से उसे आतंकी संगठन हिजबुल का पोस्टर बॉय भी कहा गया। सेना के हाथों मारे जाने पर मीडिया में उसकी जो फोटो प्रकाशित हुई है, उससे ऐसा लग रहा था जैसे कोई आतंकी नहीं, अलबत्ता सैनिक मारा गया हो। इस तरह की कुछ बातें हैं, जो कश्मीर में हालात को और ज्यादा बिगाड़ रही हैं।

आतंकी को मारना कोई अपराध नहीं है। मगर बुरहान वानी की मौत पर पूरी कश्मीर घाटी ऐसे उबल रही है जैसे कोई आतंकी नहीं, देशभक्त मारा गया हो। जमीनी सच्चाई भी यही है। घाटी में अलगाववादी और पाकिस्तानी पिट्ठू बुरहानी और उस जैसे आतंकी की मौत को शहादत के रुप में पेश कर रहे हैं और अवाम भी कमोवेश यही मान रही है। बुरहानी न तो कोई देशभक्त था और न ही बड़ा नेता। आतंक का चोला पहनकर और खून-खराबा करके कोई देशभक्त या फाइटर नहीं बन जाता। दुखद स्थिति यह है कि कश्मीर घाटी में पाकिस्तान के पिट्ठू अवाम को गुमराह करने में सफल रहे हैं और राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय राजनीतिक दल अलगाववादियों को अलग-थलग करने में पूरी तरह से विफल। कश्मीर के अधिकतर युवा सेना में भर्ती होने के बजाय आतंकी संगठनों की ओर ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। अलगाववादी और आतंकी संगठन युवाओं को आसानी से गुमराह कर देते हैं क्योंकि स्थानीय और राष्ट्रवादी नेता खुद पद और पैसे के पीछे भागते हैं। और यही वजह है कि सियासी नेताओं पर स्थानीय लोगों का जरा भी भरोसा नहीं रह गया है। वे पूरी तरह से नकार दिए गए हैं।

जब कभी भी कश्मीर घाटी में हिंसा भड़कती है, अलगाववादी और पाकिस्तानी समर्थक स्थिति का खूब फायदा उठाते हैं। यह सिलसिला लंबे समय से चल रहा है। घाटी की अवाम में सुरक्षा बलों के प्रति इतनी घृणा है कि लोग-बागी सैनिकों और पुलिसकर्मियों को देखते ही पत्थर फेंकते हैं। पत्थरबाजी के लिए राज्य सरकार ने कई लोगों को जेल में भी ठूंसा और मुकदमे चलाए, मगर यह सिलसिला थमा नहीं। वानी की मौत से पहले ईद पर राज्य सरकार ने 634 पत्थरबाजों के खिलाफ 103 मुकदमे वापस ले लिए थे। अब वही लोग फिर से सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी कर रहे हैं। कश्मीर की अवाम घाटी में सेना की तैनाती के सख्त खिलाफ रही है।

सेना की उपस्थिति को कश्मीरी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में बेवजह का दखल मानते हैं। लंबे समय से घाटी में सेना तैनात है। उस पर सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम (एएफएसपीए) के तहत सुरक्षा बलों को किसी के घर में तलाशी लेने अथवा किसी को गिरफ्तार करने के अधिकार मिलने से इनका बेजा इस्तेमाल होना स्वभाविक है। नतीजतन, सुरक्षा बलों पर जब-तब यौन उत्पीड़न अथवा हत्या के आरोप लगते रहे हैं।

कश्मीर घाटी के ताजा हालात से एक बात तो साफ है कि अवाम मेन स्ट्रीम से दूर होती जा रही है और स्थानीय नेता और सरकार पूरी तरह से विफल हो चुकी है। केंद्र से भारी वित्तीय मदद के बावजूद अवाम का राष्ट्रीय मुख्य धारा से पूरी तरह से नहीं जुड़ पाई है। यह स्थिति देश की अखंडता के लिए ठीक नहीं है। अब समय आ गया है कि कश्मीर को लेकर केंद्र और सभी राजनीतिक दलों को मिल-बैठ कर कारगर नीति बनानी चाहिए।

चीन की तमतमाहट

अंतरराष्ट्रीय न्यायिक तंत्र के लिए किसी देश को उसकी गलतियों के लिए जिम्मेदार ठहराना आसान नहीं होता। तब तो और, जब वह चीन जैसा ताकतवर देश हो। फिर भी 12 जुलाई को इतिहास में पहली बार एक वैश्विक ट्रिब्यूनल ने चीन को कहा कि उसने फिलीपींस के द्वीप पर दावा करके अंतरराष्ट्रीय कानून तोड़ा है। हेग स्थित परमानेंट कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन का यह फैसला कई व्यावहारिक मुद्दों को उठाता है।

तो क्या चीन इस फैसले का उल्लंघन करेगा और स्पार्टले आइलैंड के करीब से गुजरने वाले किसी विदेशी जहाज या विमान को धमकाएगा? क्या वह दूसरे मुल्कों पर अपना दावा मानने के लिए अपनी आर्थिक हैसियत का दबाव डालेगा या फिर कमजोर एशियाई देशों को द्विपक्षीय समझौतों के लिए बाध्य करेगा? ये सवाल इसलिए उठ रहे हैं, क्योंकि चीन ने पहले तो पैनल की कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया और फिर बाद में उसके फैसले को अमान्य घोषित कर दिया। विदेशी दबाव के अलावा यह फैसला अवाध्यकारी है।

बीजिंग ने जैसी सख्त प्रतिक्रिया दी है, वह बताता है कि विवादों के शांतिपूर्ण हल के सिद्धांत के तहत 1945 में गठित संयुक्त राष्ट्र का साबका किस तरह की दुनिया से है। चीन की ललकार 1982 के लॉ ऑफ सी ट्रीटी में सन्निहित कानूनों की भी अवमानना है। अन्य देशों की तरह चीन ने भी इस करार पर दस्तखत किए हैं और उसके नियमों के आधार पर ही पैनल ने फैसला दिया है।

अब अगर चीन इस करार से अपने को अलग कर लेता है, तब भी फैसला तो कायम रहेगा। पहले भी बड़ी वैश्विक ताकतों ने अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण के फैसलों की अनदेखी की है, हालांकि आम तौर पर उन्होंने उसके फैसलों का सम्मान करने की कोशिश की है। 1985 में निकारागुआ बंदरगाह पर अमेरिकी गतिविधि के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने फैसला सुनाया था, जिसे वाशिंगटन ने नजरअंदाज कर दिया था।... बहरहाल, जो देश आज चीन को यह कहना चाहते हैं कि वह ट्रिब्यूनल के फैसले से बंधा हुआ है, उनके लिए एक मौका है कि वे इसी वक्त उससे यह भी कहें कि वह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के साझा मूल्यों का भी सम्मान करे।

द क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर, अमेरिका

यूके: पीएम नईं, मुसीबतें पुरानी

ऐसा विरले ही होता है कि कार्यकाल के बीच में एक प्रधानमंत्री अपनी कुर्सी दूसरे को सौंप दे। बकिंघम पैलेस के अंत:पुर में डेविड कैमरन जब प्रधानमंत्री के तौर पर घुसे, उसके एक घंटे के भीतर ही थेरेसा मे उनकी उत्तराधिकारी बनकर वहां से बाहर निकलीं। बेशक, चेहरा और नाम नया है, मगर जिन समस्याओं से डेविड कैमरन पिछले छह साल से जूझते रहे, उनसे मे को भी जूझना पड़ेगा, खास तौर से वित्तीय तंगी, कमजोर बहुमत और सबसे बड़ी सिरदर्दी- यूरोप।

बहरहाल, बर्मिंघम में इस हफ्ते की शुरुआत में अपने एक भाषण के दौरान मे ने जो अच्छे-अच्छे विचार परोसे थे, अगर उन्हें हकीकत बनाना है, तो उन्हें इन तमाम मुश्किलों से अपनी पुरानी शैली में निपटना होगा। ब्रेग्जिट पर अभी चर्चा होने वाली है, और उसमें एक बेहतर औद्योगिक रणनीति, शहरों की व्यापक भूमिका, टैक्स-चोरों पर सख्ती और सभी के हितों के माकूल अर्थव्यवस्था जैसी चुनौतियों पर उन्हें अपनी स्पष्ट राय रखनी होगी।

हालत यह है कि आर्थिक सुस्ती, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाओं पर बजट में कटौती आदि ने मुश्किलें बढ़ाई हैं।

अलबत्ता, एक बदलाव जो वह कर सकती हैं, और जिसके संकेत भी उन्होंने दिए हैं, वह यह कि सरकार का आचरण बदलने के लिए शीर्ष पद महिलाओं को दिए जाएं। हालांकि अपने बयान में थेरेसा ने यह नहीं बताया कि यूरोपीय संघ से अलग होने के बाद ब्रिटेन में आए संकट से पार पाने के लिए क्या किया जाएगा? बेशक उनके प्रधानमंत्री बनने के अगले 24 घंटे में यह साफ हो जाएगा कि प्रमुख पद किनको-किनको मिलने वाला है, मगर यह तय है कि ब्रेग्जिट कम से कम दो वर्षों तक राजनीतिक परिदृश्य पर हावी रहने वाला है।

यानी नई प्रधानमंत्री के लिए बड़ा काम यह रहेगा कि इससे जुड़ी प्रक्रिया को पूरा करने की जिम्मेदारी किसे सौंपी जाए। फर्स्ट चेयर के पद पर रहने के दौरान थेरेसा ने महिला सांसदों की नियुक्ति में बड़ी भूमिका निभाई थी।

इसी वजह से कैमरन से उन्हें विरासत में अनुभवी महिलाएं मिली हैं। एम्बर रूड, जस्टिन ग्रीनिंग, थेरेसा विलियर्स ऐसे ही नाम हैं, जिन्हें बड़ी जिम्मेदारी दी जा सकती है। अब देखना यह है कि महिलाएं आखिर किस तरह बिल्कुल अलग राजनीति करती हैं।

-द गार्जियन, ब्रिटेन

सबसे बड़ा धर्म है अपने स्वभाव के प्रति सच्चे होना। स्वयं पर विश्वास करो।

-स्वामी विवेकानंद

पाठकों के लिए

विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक एवं धार्मिक विषयों पर सभी प्रबुद्ध पाठकों के लेख, लघु कथाएं तथा कविताएं आमंत्रित हैं।

— हमारा पता —

संपादक,
चेंजिंग वेज, गुंजन भवन, तपोवन रोड चीपीओ सिद्धबाड़ी, धर्मशाला जिला कांगड़ा (हि.प्र.)-176057

Mail : badaltirahain@gmail.com

अध्यात्म

कहानी
-अजब पाराशर

पिछले अंक से आगे...

सूद जी ने लंच के लिए कार्यालय से घर आना शुरू कर दिया था। उस वक़्त मालिनी और बच्चे अपने-अपने स्कूलों में होते। दोपहर में घर पर केवल दो ही प्राणी रहते, नीतू और सूदजी। वह उनके लिए गर्म-गर्म खाना तैयार रखती और बड़े प्यार से उन्हें खिलाती। नीतू जब घर पर अकेली होती तो अक्सर टीवी देखती रहती और रोमांस के सीन उसे ख़ूब भाते। नीतू का जिस्म जवान था, देखने में भली थी। ऐसे में सूद जी की नज़र उस पर पड़ना क़ुदरती था। भले ही सूद जी ने उसे सात साल की उम्र से बड़ा होते हुए देखा था और वह सूद जी को अंकल कहकर बुलाती थी, पर सूद जी का मन अब उसके लिए मचलने लगा था। वैसे भी काम कहां उम्र और वक़्त देखता है, उसे तो बस चूल्हा चाहिए होता है धधकने के लिए। एक दिन उन्होंने नीतू का हाथ पकड़ लिया। नीतू को भी पहली बार किसी मर्द के स्पर्श का एहसास हुआ। थोड़ी देर तो वह ना-ना करती रही फिर सूद जी के आगोश में पिघल गई। अब हर रोज़ दोनों दोपहर का इन्तज़ार करते।

मालिनी नीतू को अपनी बेटी की तरह मानती थी और सूद जी पर तो उसका अगाध विश्वास था ही। वैसे भी कहते हैं कुड़ा हमेशा दूसरे की चारपाई के नीचे ही नज़र आता है। उसे पता ही नहीं चल पाया कि उसके घर में क्या चल रहा है। वैसे भी वाक्चातुर सूद जी मालिनी का ख़ूब ध्यान रखते। सूद जी और नीतू के हिसाब से सब ठीक चल रहा था लेकिन मालिनी और बच्चों के स्कूलों में सर्दियों की छुट्टियां होने की वजह से अब दोनों का मिलना मुश्किल हो गया था। सूद जी हर रोज़ लंच के लिए घर तो आते लेकिन उन्हें खाने के बाद मिष्ठान मिलना बंद हो गया था। उनसे अपने ऊपर क़ाबू रखना मुश्किल हो रहा था। यही हाल नीतू का भी था। फिर उन्होंने इसका समाधान भी निकाल ही लिया।

उन्होंने नीतू को कहा कि जब वह सुबह चार बजे ध्यान के लिए ऊपर वाले कमरे में जाते हैं तो वह भी ऊपर आ जाया करे। कई दिन तक वे दोनों दोपहर की मिठाई ब्रह्म मुहूर्त में छकते रहे। लेकिन एक दिन मालिनी ने नीतू का सीढ़ियां चढ़ते देख लिया। उसका माथा ठनका। कुछ देर बाद वह भी धीरे-धीरे ऊपर पहुंच गई। पूजा कक्ष का जीरो वॉट का बल्ब जल रहा था पर दरवाज़ा भिंचा हुआ था। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला तो भीतर का दृश्य देखकर उसका ख़ून खौल उठा। नीतू सूद जी की गोद में बैठी हुई थी। दोनों मालिनी को देखकर हड़बड़ा गए पर सूद जी ने आपा नहीं खोया। वह संयत होकर बोले, अरे मालू! जो तुम सोच या बोल रही हो, ऐसा कुछ भी नहीं है। भला पूजा वाले कमरे में कोई ऐसा कुछ करने की हिमाक़त कर सकता है। मैं तो बस इसे ध्यान की विधि सिखा रहा था। भला तुम्हें छोड़कर मैं और कहीं जा सकता हूँ। प्लीज़ मेरा विश्वास करो, ऐसा कुछ भी नहीं है। लेकिन मालिनी ने अपनी आँखों से जो दृश्य देखा था, वह उसे झुठला नहीं सकती थी। वह नीतू को खींचते हुए नीचे ले आई और उसे सख़्त हिदायत दी कि अगर फिर उसने कभी दोनों को ऐसी हालत में देखा तो वह उसे घर छोड़ आएगी। उसका एक दिल तो किया कि वह नीतू को घर भेज दे किन्तु उसे लगा कि अगर वह उसे अभी भेज दे तो घर का संभालना मुश्किल हो जाएगा। लेकिन उसके दिल में सूद जी के लिए अविश्वास तो पैदा हो ही गया था। उसका दिल तो किया कि वह सूदजी के उस चेहरे को नोच खाए जिसको देखकर वह पहली ही बार में उन पर फ़िदा हो गई थी। वह उन्हें पकड़कर झाड़ू से पीटे और धक्के मारकर घर से बाहर निकाल दे। लेकिन फिर बच्चों और नाते-रिश्तेदारों का ख़्याल आते ही दुबक कर बैठ गई। उसे लगा कि नाते-रिश्तेदारों में उसकी क्या इज़्ज़त रह जाएगी जब उन्हें पता चलेगा कि जिस आदमी के

लिए अपने मां-बाप को इकलौती औलाद होने के बावजूद उसने उन्हें छोड़ दिया, वह अब अपनी बेटी की उम्र की नौकरानी के साथ इश्क़ लड़ा रहा है। अगर वह कोई बखेड़ा खड़ा करती है तो उसके बच्चे बर्बाद हो जाएंगे।

चाहे पकड़े जाने का डर बना रहे पर चोरी का गुड़ हमेशा ज्यादा ही मीठा लगता है। दोनों ने छुट्टियां ख़त्म होने का इन्तज़ार किया और स्कूल शुरू होने के बाद पहले दिन दोपहर को ऐसे मिले मानो दो प्रेमी कितने जन्मों के बाद मिल रहे हों। उन्होंने जी भरकर मिलने के बाद ही लंच किया। फिर यह सिलसिला तब टूटा जब एक दिन मालिनी स्कूल में किसी बच्चे की अकाल मौत के कारण जल्दी छुट्टी होने पर असमय घर पहुंच गई। घर के बाहर सूद जी की सरकारी गाड़ी देखने के बाद दिन में सारे दरवाज़े बंद देखकर उसका माथा ठनका। घंटी बजाने पर नीतू ने बदहवासी में दरवाज़ा खोला और सूद जी ने बाथरूम की शरण लेकर अपने आपको बचाने का प्रयास किया। घर में ख़ूब हंगामा हुआ। अब कुछ खोलने की गुंजाइश बाक़ी न थी लेकिन सूद जी नीतू को घर भेजने को तैयार न थे।

मालिनी बच्चों की वजह से अपने आपको बेबस पा रही थी। उससे सारा घटनाक्रम न निगलते बन रहा था न उगलते। बच्चे अपने पापा को ख़ूब प्यार करते थे और दोनों बेटियां ज़िन्दगी के उस मोड़ पर खड़ी थीं जहां अगर थोड़ी सी भी चूक होती तो उनका करियर तबाह हो सकता था। वह एक बार फिर सन्तुलन क़ायम करने का प्रयास कर रही थी। उसने सूद जी को उपाय सुझाया कि नीतू ने सिलाई-कढ़ाई का कोर्स तो किया ही है क्यों न उसे जीना सिखाने वाली संस्था की रेडीमेड वस्त्र उत्पादन करने वाली व्यावसायिक इकाई में नौकरी दिलवा दी जाए।

सूद जी इसके लिए तैयार न थे, उन्होंने मना कर दिया।

उसके पूछने पर बोले, ''तुम्हें पता है वहां अन्दर कारपेट कितनी करप्शन है। वहां जितनी भी वॉलिंटयर हैं सभी का शारीरिक शोषण होता है।'' इस पर मालिनी ने झूठते ही कहा, ''घर में क्या कुछ अलग हो रहा है?'' पर सूद जी ने किसी तरह मालिनी को मना लिया कि वह बच्चों के सामने कोई हंगामा न करे और उसे अपने प्यार की क़सम देते हुए भरोसा दिलाया कि आज जो कुछ हुआ है, वह आईंदा कभी नहीं होगा। लेकिन वह नीतू को घर से न भेजे। फिर उन्होंने परोक्ष रूप से नीतू से कुछ दूरी बना ली। बेचारी मालिनी ने फिर एक बार सूद जी पर विश्वास कर लिया।

कुछ दिन बाद सूद जी का स्थानान्तरण राजधानी हो गया। अब वह निदेशालय में तैनात थे। मालिनी ने सूद जी को उसकी ट्रांसफर राजधानी करवाने के लिए कहा। पर सूद जी ने इसके लिए मना करते हुए कहा कि बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ेगा और फिर इतना बड़ा घर अकेला छूट जाएगा। मालिनी को लगा कि सूद जी के राजधानी जाने से नीतू की समस्या फिलवक़्त हल हो गई है।

राजधानी पहुंचने के बाद सूदजी को एक प्रमोशन और मिल गई। उन्हें सरकारी मकान भी अलॉट हो गया था। घर काफी बड़ा था, सूद जी ने वहां पूरी गृहस्थी जमा दी। फिर वह कुछ दिनों के लिए अपने घर छुट्टी आए। उन्होंने मालिनी से कहा कि क्योंकि बच्चे बड़े हो गए हैं और अब नीतू को घर में रखने का कोई औचित्य मुझे नज़र नहीं आ रहा है। कुछ दिनों बाद वैसे भी इसके घर वाले इसकी शादी करने की सोच रहे हैं। क्यों न हम इसे इसके घर छोड़ दें? वैसे भी हमने केवल शादी का ख़र्च देना है न कि उसके लिए लड़का ढूंढना है।

मालिनी के कुछ सोच-विचार के बाद हां कहने पर सूदजी उसे घर छोड़ आए। छुट्टी बिताने के बाद सूद जी राजधानी वापिस चले गए।

कुछ दिन बाद गांव से नीतू की मां मालिनी से मिलने के लिए आई। उसे लगा कि शायद उन्होंने नीतू के लिए कोई लड़का पसंद कर लिया है। लेकिन उसके पांव के नीचे से ज़मीन खिसक गई जब नीतू की मां ने बताया कि नीतू को तो साहिब अपने साथ ले गए हैं, क़रीब एक महीना पहले। मालिनी को लगा कि उसकी आंखों के आगे तारे नाच रहे हैं और उसके कान बंद हो गए हैं। नीतू की मां बोले जा रही थी, ''साहिब कह रहे थे कि उन्हें खाने की दिक्कत हो रही है। शाम को वह लेट हो जाते हैं, सुबह जल्दी जाना होता है। होटलों में ठीक खाना मिलता नहीं और अकेले उनकी सेहत ख़राब हो रही है।''

होश में आने पर मालिनी को अब समझ आ रहा था कि क्यों सूद जी उसकी ट्रांसफर अपने साथ राजधानी नहीं करवाना चाह रहे थे। बाद में उसे पता लगा कि सूद जी ने पूरी प्लानिंग के साथ ख़ुद अपना तबादला राजधानी करवाया था। वह नीतू को अपने साथ ही रखना चाहते थे। अगर घर में रहते तो हर रोज़ क्लेश होता और बच्चों के सामने कलई खुल जाती। नीतू घर भेजने का सिर्फ़ बहाना था। वह उनके पास राजधानी भी गई लेकिन सूद जी ने कहा कि अब उनके और नीतू के बीच कोई जिस्मानी ताल्लुक़ात नहीं हैं। अब जो है वह उसका वहम है और वहम का ईलाज तो हक़ीम लुकमान के पास भी नहीं था। उन्हें वाक़ई खाना बनाने में दिक्कत होती है इसीलिए वह नीतू को अपने साथ शिमला ले आए। जब मालिनी ने कहा कि वह अपनी ट्रांसफर राजधानी करवा लेगी और बच्चों को भी यहीं शिफ्ट कर लेगी तो सूद जी बोले, ''क्यों घर बर्बाद कर रही हो? तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करती। तुम्हारे घर छोड़ने से शहर के बीचोंबीच करोड़ों रुपये का घर और ज़मीन ख़राब हो जाएगी।''

पर मालिनी आंखों देखे को कैसे झुठलाती। उसके अपने मां-बाप तो काफी पहले गुज़र चुके थे। उसने सूद जी के पिताजी से इस मुद्दे पर बात की पर उन्होंने हाथ खड़े कर दिए और बोले, ''अब तक तो तुम दोनों अपनी ज़िन्दगी स्वयम् जी रहे थे। अब बीच में मुझे क्यों घसीट रहे हो।'' उसने देवरों से भी बात की पर कोई समाधान नहीं निकला। उसने सूद जी के कुछ ख़ास दोस्तों से भी बात की, पर सब सूद जी के सामने नतमस्तक थे। सबको पता था कि अध्यात्म के रास्ते पर पग बढ़ाते वाक्चातुर्य से भरपूर सूद जी से जीतना उनके बस की बात नहीं है।

मालिनी अपने माज़ी में भटकते हुए अपने पिता को याद करती और सोचती क्यों उसने अपने मां-बाप का इकलौती औलाद होने के बाद उनका कहना नहीं माना। इसके बावजूद उसके पिता ने अपना घर और ज़मीन उसी के नाम कर दिए। आज वह अपने बच्चों के साथ उसी घर में है लेकिन बिना पति के। उसे लगता कि हो न हो, यह सब उसके मम्मी-पापा की बद्दुआओं का ही नतीजा है। उधर, सूद जी राजधानी में अपनी बेटी की उम्र की लड़की के साथ संभोग से समाधि की ओर कदम बढ़ाना सीख रहे थे।

-समाप्त

चेंजिंग वेज
Changing Ways
धर्मशाला, 18 जुलाई 2016

अच्छी सेहत के लिए इन आदतों से बचें

अनजाने ही खानपान को लेकर आपकी जो आदतें बन जाती हैं वे आपको बहुत ज्यादा नुकसान भी पहुंचा सकती हैं। इन आदतों के कारण आप ओवरईटिंग करते रहते हैं या बहुत ज्यादा सतर्कता बरतते हुए जरूरी पोषक तत्वों से भी दूर हो जाते हैं और खामियाजा भुगतते हैं। जानिए कि अपनी किन आदतों को बदलना जरूरी है ताकि आप खानपान को लेकर संतुलित राह चुन सकें। जब तक आप अपनी आदतों को ठीक नहीं करते हैं तब तक कुछ भी काबू में नहीं रहता है।

डेस्क पर ही खाना

कुछ लोग दफ्तर में अपनी डेस्क पर ही भोजन करने के आदी हो जाते हैं। वे काम के दबाव में ऐसा करते हैं या फिर उनका आलस ऐसा करने के लिए उन्हें मजबूर करता है। यह समझना जरूरी है कि काम में डूबे हुए आप जरूरत से 30 प्रतिशत भोजन ज्यादा करते हैं। यह ठीक वैसा ही है कि व्यक्ति टीवी देखते हुए जरूरत से ज्यादा भोजन कर लेता है। अगर यह आदत है तो उसे बदलिए।

फैट से बचने की कोशिश

किसी भी चीज को खरीदते हुए लोग अक्सर उस पर फैट कंटेंट को देखते हैं और फिर निर्णय लेते हैं। मगर हर तरह का फैट आपके लिए नुकसानदायक नहीं है। बहुत सारे फैट्स खानपान में शामिल करना जरूरी है। कुछ प्राकृतिक फैट्स मेटाबॉलिज्म को तेज करते हैं और इस तरह ये कैलोरी बर्न करने में मददगार होते हैं। कुछ हमें ऊर्जा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। अखरोट, ऑलिव ऑइल या पीनट बटर जैसी चीजों से डरिए नहीं।

जल्दबाजी में खाना

हमसे पहले की पीढ़ी 30 से 50 मर्तबा चबाने के बाद भोजन को निगलती थी जबकि आज की पीढ़ी बहुत जल्दबाजी में खाने को सीधे ही निकल जाती है। माना जाता है कि यह पीढ़ी भोजन को 20 बार भी नहीं चबाती है। जब आप धीरे-धीरे भोजन करते हैं तो आपको एहसास रहता है कि आपने कितना खाना लिया है जबकि जल्दबाजी में भोजन करने पर आप पेट को पहले भर लेते हैं और बाद में लगता है आपने ज्यादा खा लिया।

ब्रेकफास्ट छोड़ देना

रात को जब आप सोते हैं तो आपका मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है और इसकी रफ्तार तेज करने के लिए आपको सुबह हल्का नाश्ता करना चाहिए। यह बहुत ही रोचक तथ्य है कि जो लोग मोटापे पर काबू पाना चाहते हैं उन्हें सुबह का नाश्ता छोड़ने के बजाय अनिवार्य तौर पर नाश्ता करना चाहिए।

रात में खाने की आदत

कुछ लोग रात के खाने के बाद भी कुछ खाने की इच्छा रखते हैं तो कुछ रात में नींद खुलने पर कुछ न कुछ खाते हैं। रात के खाने के बाद आप जो भी खाते हैं वह अमूमन शरीर में फैट के रूप में जमा हो जाता है और उससे वजन बढ़ता है। इससे बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप रात के भोजन के बाद किचन की तरफ रुख ही न करें या खाने-पीने की चीजें न रखें।

डाइट फूड की दुविधा

आजकल हर जगह डाइट ड्रिंक्स, लो फैट फूड, जीरो फैट फूड, नो कैलोरीज या लो कैलोरीज जैसी टैगलाइन के साथ चीजें बिक रही हैं। कंपनियां आपकी अतिरिक्त सतर्कता का फायदा उठाकर आपको इस तरह की चीजें बेचती हैं लेकिन यह सोचने की जरूरत है कि ये पदार्थ कितने हेल्दी हैं। पैकेज्ड फूड के पोषक गुण हमेशा से संदेह के घेरे में रहे हैं। ताजे फल और सब्जियों से जो फायदा है वह पैकेज्ड से नहीं।

ललचाता जंक फूड

अध्ययन करने वालों का कहना है कि जब भी जंक फूड आपकी नजर के सामने से गुजरता है तो आप उसे खाने के लिए ललचा ही उठते हैं। इसलिए कोशिश कीजिए कि आप इस तरह की चीजों से खुद को दूर रखें। अगर आपके कैंटीन में इस तरह की चीजें मिलती हैं तो आप खाने की जगह को बदल सकते हैं। अपने लिए अलग केबिन चुनें या इच्छाशक्ति दिखाएं।

पर्याप्त पानी न पीना

वजन या मोटापा कम करने के लिए आप खाने को लेकर बहुत सावधान हो गए हैं और कसरत करके पसीना भी बहा रहे हैं लेकिन अगर आप पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं पीते हैं तो आपके प्रयासों के सही नतीजे नहीं मिलेंगे। शरीर में जल की कमी से आप जो भी खाते हैं उसका पाचन बहुत धीमे होता है। हमेशा पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें।

31 दिसंबर से इनमें नहीं चलेगा व्हाट्सएप

अगर आप भी सिंबियन ओएस वाला स्मार्टफोन यूज करते हैं तो आपके लिए एक बुरी खबर है। 31 दिसंबर के बाद से आपके फोन पर व्हाट्सएप चलना बंद हो जाएगा। हालांकि अब ज्यादा लोग एंड्रॉयड और आईओएस वाले स्मार्टफोन यूज करने लगे हैं, लेकिन अभी कई लोग सिंबियन ओएस वाले मोबाइल फोन यूज कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार 31 दिसंबर के बाद से व्हाट्सएप सिंबियन के लिए लगाए गए अपने सर्वर बंद कर देगा, जिससे यह एप सिंबियन ओएस वाले फोनों पर काम नहीं करेगा। यदि सिंबियन ओएस वाले यूजर अभी अपने फोन पर व्हाट्सएप यूज कर रहे हैं

तो वे 31 दिसंबर के बाद इस सुविधा से वंचित हो जाएंगे।

सिंबियन ओएस नोकिया, सैमसंग, सोनी एरिक्सन और मोटोरोला समेत कई कंपनियों के फोनों में हुआ करता था। हालांकि अभी तक यह ओएस खत्म तो नहीं हुआ है, लेकिन व्हाट्सएप सपोर्ट बंद होने पर इसके दिन पूरी तरह से लद जाएंगे। इसके लिए व्हाट्सएप ने अपने सिम्बियन यूजर्स को नोटिफिकेशन भेजना शुरू कर दिया है। इस साल की शुरुआत में ही व्हाट्सएप ने यह ऐलान किया था कि 2016 अंत तक कई मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम प्लेटफॉर्म्स पर यह एप सपोर्ट नहीं करेगा। गौर हो कि इस साल फरवरी में मोबाइल मैसेजिंग सर्विस व्हाट्सएप ने एक ब्लॉग जारी किया था। जिसमें बताया गया था कि इस साल अंत तक ब्लैकबेरी ओएस (बीबी 10) के लिए अपना सपोर्ट बंद कर देगी। मार्च में व्हाट्सएप ने 2016 के बाद कई मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए सपोर्ट बंद करने की घोषणा की थी। इस लिस्ट में ब्लैकबेरी और नोकिया के ऑपरेटिंग सिस्टम के अलावा एंड्रॉइड और विंडोज ओएस के पुराने वर्जन भी थे। सपोर्ट बंद होने वाले ओएस की लिस्ट में सबसे बड़ा नाम ब्लैकबेरी 10 ओएस का है। इसके अलावा ब्लैकबेरी के अन्य ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए भी सपोर्ट नहीं मिलेगा। नोकिया के पुराने फोन जो सिंबियन एस40 और सिंबियन एस60 ओएस को सपोर्ट करते हैं उन पर भी 2017 से व्हाट्सएप सपोर्ट नहीं मिलेगा। एंड्रॉइड 2.1 एक्लेयर, एंड्रॉइड 2.2 फ्रोयो के अलावा विंडोज फोन 7.1 डिवाइसेस के लिए भी अगले साल से ये सपोर्ट बंद हो जाएगा। कंपनी ने अपने एक ब्लॉग पोस्ट में इस फैसले की जानकारी दी थी। कंपनी ने इस तरह के मोबाइल फोन यूजर्स को अपना पुराना फोन जल्द ही नए ऑपरेटिंग सिस्टम वाले फोन से अपग्रेड करने के लिए कहा है।

रेप पीड़ित से गलत सवाल पर खतरे में पड़ी जज की नौकरी

टोरंटो। रेप पीड़िता से जज ने ऐसा सवाल किया कि उसके बाद उसे नौकरी के लाले पड़ गए हैं। अब अपनी नौकरी बचाने के लिए वह खुद अदालत में अपनी सुनवाई के लिए दौड़भाग कर रहा है। वर्ष 2014 के एक रेप मामले में सुनवाई करते हुए जज रॉबिन कैंप ने पीड़िता से कहा कि रेप के दौरान उसने अपने घुटने क्यों नहीं चिपकाए रखे, ताकि रेप से बच सके। इस मामले में स्कॉट वेगनर ने 19 वर्षीय लड़की के साथ दुष्कर्म किया था।

इतना ही नहीं, जज ने पीड़िता को ही इस मामले का आरोपी बताया। इसके साथ ही दुष्कर्म करने वाले वेगनर को बरी कर दिया। मगर, अल्बेर्टा कोर्ट ऑफ अपील ने इस फैसले को अगले साल पलट दिया और नए सिरे से मामले की सुनवाई का आदेश दिया। इस मामले में अब कैनेडियन ज्यूडिशियल काउंसिल के सामने जज कैंप के मामले की सुनवाई हो रही है। माना जा रहा है कि उनकी नौकरी जा सकती है। यूनिवर्सिटी ऑफ कालगेरी के कई कानूनी विशेषज्ञों ने उनके आचरण की शिकायत की थी। सीजेसी के सामने स्वीकारोक्ति करते हुए जज कैंप ने अपनी टिप्पणी के लिए माफी मांगी। उन्होंने स्वीकार किया कि मामले की सुनवाई के दौरान असंवेदनशील और अनुचित टिप्पणी की थी। मगर, उन्होंने कहा कि अब वह एक बेहतर जज बनेंगे इसके लिए उन्होंने प्रशिक्षण लिया है और एक न्यायाधीश, मनोवैज्ञानिक और यौन उत्पीड़न पर विशेषज्ञ से काउंसिलिंग कराई है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक : संदीप परमार द्वारा वीपीओ सिद्धबाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा-176057, हि प्र से प्रकाशित एवं इम्पीरियल प्रिंटिंग प्रेस, गुरुद्वारा रोड धर्मशाला से मुद्रित। फोन नंबर : 01892-235315 Mail : badaltirahain@gmail.com